The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 3 | Issue 7 | July 2025
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

शहरी क्षेत्रों में कार्यरत महिलाओं की सामाजिक एवं आर्थिक चुनौतियाँ

अदिति कुमारी
स्वतंत्र शोधार्थी, आरा, बिहार [ईमेल: aditikumaribhu23@gmail.com]

शुभम कुमार साह
शोधार्थी, दक्षिण बिहार केंद्रीय विश्वविद्यालय [ईमेल: skscusbgaya@gmail.com]

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.16793220

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Accepted: 21-07-2025

Published: 10-08-2025

Keywords:

महिला श्रम, शहरी समाज, आर्थिक असमानता, सामाजिक चुनौतियाँ, महिला सशक्तिकरण

ABSTRACT

इस शोध लेख में शहरी क्षेत्रों में कार्यरत महिलाओं की सामाजिक एवं आर्थिक चुनौतियों का विश्लेषण किया गया है। बीते कुछ दशकों में महिलाओं की शिक्षा, जागरूकता और आत्मनिर्भरता में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है, जिसके चलते वे विभिन्न पेशेवर क्षेत्रों में सक्रिय रूप से भाग ले रही हैं। बावजूद इसके, उन्हें कई स्तरों पर असमानताओं का सामना करना पड़ता है—जैसे कार्यस्थल पर वेतन भेदभाव, पदोन्नति में बाधा, सुरक्षा की चिंता, और पारिवारिक व सामाजिक दायित्वों के बीच संतुलन की कठिनाई। लेख में कार्यरत महिलाओं की वर्तमान स्थिति, सामाजिक पूर्वग्रहों, आर्थिक असमानताओं, सरकारी योजनाओं और हाल के सकारात्मक परिवर्तनों पर विस्तार से चर्चा की गई है। यह भी दर्शाया गया है कि किस प्रकार शिक्षा, डिजिटल साक्षरता और उद्यमिता महिलाओं को एक नई दिशा दे रही है। लेख का निष्कर्ष यह है कि महिलाओं की पूर्ण सहभागिता के बिना समावेशी विकास असंभव है। अतः उन्हें समान अवसर, सम्मान और सुरक्षित वातावरण प्रदान करना आवश्यक है। सुझाव भाग में नीतिगत सुधार, सामाजिक सोच में परिवर्तन, और पुरुष सहभागिता को भी बल दिया गया है।

प्रस्तावना (Introduction)

भारत में महिलाओं की सामाजिक भूमिका का दायरा निरंतर विस्तार पा रहा है। एक समय था जब महिलाओं की भूमिका केवल घर तक सीमित थी, लेकिन आज शहरी क्षेत्रों की महिलाएं शिक्षा, स्वास्थ्य, सूचना प्रौद्योगिकी, बैंकिंग, पत्रकारिता,

प्रशासन, और उद्यमिता जैसे विविध क्षेत्रों में सक्रिय रूप से कार्य कर रही हैं। शहरी महिलाएं अब न केवल अपनी आजीविका चला रही हैं, बल्कि अपने परिवार और समाज को भी आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक रूप से सशक्त बना रही हैं।

शहरी क्षेत्रों में महिलाओं की भागीदारी, उनके आत्मविश्वास, कौशल और शिक्षा के स्तर को दर्शाती है। हालांकि, इस उन्नति के बावजूद कार्यरत महिलाओं को अनेक सामाजिक एवं आर्थिक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जो उनके समग्र विकास में बाधा बनती हैं। जैसे-जैसे महिलाएं पारंपरिक भूमिकाओं से बाहर निकल रही हैं, वैसे-वैसे उन्हें पारिवारिक दायित्वों, सामाजिक सोच, कार्यस्थल पर भेदभाव, और सुरक्षा से जुड़े मुद्दों से संघर्ष करना पड़ता है।

इस लेख का उद्देश्य शहरी क्षेत्रों में कार्यरत महिलाओं की उन चुनौतियों का विश्लेषण करना है जो उनके सामाजिक व आर्थिक जीवन को प्रभावित करती हैं। साथ ही, उन सरकारी नीतियों व सकारात्मक प्रयासों की भी चर्चा की जाएगी जो महिलाओं के लिए सहयोगी वातावरण बनाने में सहायक हैं। शोध का यह प्रयास न केवल महिलाओं की समस्याओं को उजागर करेगा, बल्कि संभावित समाधान की दिशा में भी सोचने को प्रेरित करेगा।

आज जब भारत "विकसित राष्ट्र" बनने की ओर अग्रसर है, तब यह आवश्यक हो जाता है कि समाज की आधी आबादी को समान अवसर, सम्मान और सुरक्षा मिले। तभी सच्चे अर्थों में समावेशी विकास संभव होगा। इसलिए, शहरी क्षेत्रों में कार्यरत महिलाओं की स्थिति का अध्ययन एक अत्यंत महत्वपूर्ण विषय है।

2. शहरी महिला श्रमिकों की स्थिति

शहरी भारत में महिलाओं की श्रम भागीदारी हाल के वर्षों में उल्लेखनीय रूप से बढ़ी है। शिक्षा, स्वास्थ्य, आईटी, बैंकिंग, प्रशासनिक सेवाओं, मीडिया, स्टार्टअप्स और खुदरा व्यापार जैसे क्षेत्रों में महिलाएं सक्रिय रूप से कार्यरत हैं। इनमें से कई महिलाएं उच्च पदों पर आसीन हैं, जैसे कि डॉक्टर्स, इंजीनियर्स, वकील, प्रोफेसर, सीईओ और नीति निर्धारक।

राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण (NSSO) और Periodic Labour Force Survey (PLFS) जैसे सरकारी आंकड़ों के अनुसार, शहरी क्षेत्रों में महिला श्रमिकों की संख्या बढ़ी जरूर है, लेकिन यह अब भी पुरुषों की तुलना में कम है। औपचारिक क्षेत्र (जैसे सरकारी नौकरियाँ, कॉर्पोरेट सेक्टर आदि) में महिलाओं की भागीदारी अपेक्षाकृत कम है, जबकि असंगठित क्षेत्र (जैसे घरेलू नौकरानी, रिसेप्शनिस्ट, दुकानों में सहायक कार्य) में अधिक महिलाएं कार्यरत हैं।

शहरी महिलाओं की स्थिति अब केवल "कमाने वाली" तक सीमित नहीं है, बल्कि वे निर्णय लेने, नेतृत्व करने और नवाचार करने में भी आगे आ रही हैं। विशेष रूप से युवतियाँ स्टार्टअप संस्कृति, डिजिटल प्लेटफॉर्म्स और स्वरोज़गार की ओर तेजी से आकर्षित हो रही हैं। यह बदलती प्रवृत्ति महिला सशक्तिकरण की ओर एक सकारात्मक संकेत है।

हालांकि, अभी भी कई वर्गों की महिलाएं शिक्षा और प्रशिक्षण के अभाव में केवल निम्न स्तरीय नौकरियों तक सीमित हैं। जाति, वर्ग और आर्थिक स्थिति के कारण कुछ महिलाओं को कार्यस्थल पर भेदभाव का सामना करना पड़ता है। साथ ही, 'कार्य और जीवन संतुलन' (work-life balance) बनाए रखना एक बड़ी चुनौती है।

फिर भी यह कहना गलत नहीं होगा कि शहरी महिला श्रमिक आज आत्मनिर्भरता की दिशा में निरंतर बढ़ रही हैं। समाज, सरकार और निजी क्षेत्रों की भागीदारी से उन्हें एक ऐसा वातावरण प्रदान किया जाना चाहिए, जिसमें वे सुरक्षित, सम्मानित और समर्थ बन सकें।

3. सामाजिक चुनौतियाँ

शहरी क्षेत्रों में कार्यरत महिलाओं को अनेक सामाजिक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। ये चुनौतियाँ केवल कार्यस्थल पर ही नहीं, बल्कि परिवार और समाज के विभिन्न स्तरों पर भी देखने को मिलती हैं। सबसे पहले बात करें परिवार की, तो अधिकांश महिलाएं आज भी पारिवारिक जिम्मेदारियों की प्रधान धुरी मानी जाती हैं। नौकरी के साथ-साथ घर की देखरेख, बच्चों की पढ़ाई, बुजुर्गों की सेवा जैसे कामों की अपेक्षा मुख्यतः महिलाओं से ही की जाती है।

इसके अतिरिक्त, सामाजिक सोच में अब भी यह पूर्वग्रह बना हुआ है कि स्त्रियों का "मुख्य कार्य" घर की देखभाल करना है। यदि कोई महिला करियर पर ज़्यादा ध्यान देती है, तो उसे "स्वार्थी" या "परिवार विरोधी" तक कह दिया जाता है। शादीशुदा और मातृत्व की भूमिका निभा रही महिलाओं को यह दुविधा झेलनी पड़ती है कि वह अपने घर और काम दोनों को कैसे संतुलित रखें।

एक अन्य चुनौती है कार्यस्थल पर महिलाओं की सुरक्षा और सम्मान। कई बार महिलाएं यौन उत्पीड़न, मानसिक तनाव और भेदभाव का शिकार होती हैं। कुछ मामलों में, पदोन्नति की संभावनाएं भी लिंग आधारित पक्षपात से प्रभावित होती हैं। इस कारण कई महिलाएं अपने कार्य में आत्मविश्वास की कमी महसूस करती हैं या करियर से विराम लेने को मजबूर हो जाती हैं।

सामाजिक दबाव के चलते, महिलाएं अपने करियर विकल्पों में भी सीमित रहती हैं। उदाहरण के लिए, रात की शिफ्ट या यात्रा से जुड़े कार्य से वे अक्सर वंचित रहती हैं क्योंकि इसे "असुरक्षित" माना जाता है। इसके अलावा, शादी के बाद या माँ बनने के बाद करियर में रुकावटें सामान्य हो जाती हैं।

इन सभी सामाजिक चुनौतियों के बावजूद, महिलाएं डटकर आगे बढ़ रही हैं। लेकिन यदि समाज सहयोग न करे तो यह प्रगति बाधित हो सकती है। इसलिए आवश्यक है कि सामाजिक सोच में बदलाव लाया जाए और परिवार, कार्यस्थल और समाज तीनों स्तरों पर महिलाओं को सकारात्मक वातावरण प्रदान किया जाए।

4. आर्थिक चुनौतियाँ

शहरी महिला श्रमिकों को सामाजिक के साथ-साथ अनेक आर्थिक चुनौतियों का भी सामना करना पड़ता है। इनमें सबसे प्रमुख चुनौती है—लैंगिक वेतन असमानता। एक ही पद और कार्य के लिए अक्सर पुरुषों को महिलाओं की तुलना में अधिक वेतन मिलता है। इस वेतन अंतर का कोई स्पष्ट औचित्य नहीं होता, फिर भी यह सामाजिक मान्यताओं और संस्थागत पक्षपात का परिणाम होता है।

दूसरी चुनौती है—वित्तीय स्वतंत्रता का अभाव। कई बार महिलाएं आय अर्जित तो करती हैं, लेकिन उनके खर्च करने या निवेश करने के अधिकार सीमित रहते हैं। उनके निर्णयों पर परिवार या पति का नियंत्रण होता है, जिससे उनकी आर्थिक आज़ादी बाधित होती है।

इसके अलावा, वित्तीय साक्षरता की कमी भी एक बड़ी समस्या है। बहुत-सी महिलाएं बैंकिंग, बीमा, निवेश जैसे आर्थिक विषयों से परिचित नहीं होतीं, जिससे वे अपने संसाधनों का सही उपयोग नहीं कर पातीं। स्वरोज़गार या स्टार्टअप जैसे विकल्पों में महिलाएं अक्सर निवेश के लिए पूँजी, प्रशिक्षण या मार्गदर्शन की कमी का सामना करती हैं।

एक अन्य बड़ी चुनौती है—गर्भावस्था, मातृत्व अवकाश और करियर ब्रेक। नौकरी में मातृत्व को अवरोध के रूप में देखा जाता है, जिससे महिलाओं की पदोन्नति और दीर्घकालिक करियर विकास प्रभावित होता है। कई बार महिलाएं लंबे ब्रेक के बाद पुनः नौकरी पाने में असफल रहती हैं।

इन आर्थिक चुनौतियों का समधान केवल नीतिगत बदलावों से नहीं होगा, बल्कि समाज में आर्थिक समानता की सोच विकसित करनी होगी। वित्तीय शिक्षा, महिला केंद्रित बैंकिंग योजनाएं, महिला उद्यमिता को प्रोत्साहन और कार्यस्थलों पर लचीलापन (flexibility) जैसे उपाय जरूरी हैं।

महिलाओं की आर्थिक सशक्तता न केवल उनके लिए, बल्कि पूरे परिवार और राष्ट्र के लिए भी उन्नति का मार्ग प्रशस्त करती है। अतः महिलाओं की आर्थिक भागीदारी को बाधारहित बनाना समय की मांग है।

5. सरकारी नीतियाँ और योजनाएँ

भारत सरकार ने महिलाओं की स्थिति सुधारने हेतु कई योजनाएं और कानून लागू किए हैं, जो शहरी महिला श्रमिकों के लिए विशेष रूप से लाभकारी हैं। इन नीतियों का उद्देश्य उन्हें सुरक्षित, सशक्त और आत्मनिर्भर बनाना है।

- मातृत्व लाभ अधिनियम, 2017:

यह कानून मातृत्व अवकाश को 12 सप्ताह से बढ़ाकर 26 सप्ताह करता है, जिससे महिलाएं गर्भावस्था के दौरान काम और स्वास्थ्य दोनों को संतुलित कर सकें। यह निजी कंपनियों पर भी लागू है, जिससे कॉर्पोरेट क्षेत्र में महिला हितों की रक्षा होती है।

- POSH अधिनियम (2013):

कार्यस्थल पर महिलाओं के यौन उत्पीड़न की रोकथाम के लिए यह कानून बनाया गया। इसके तहत हर संस्था में एक आंतरिक शिकायत समिति (ICC) का गठन अनिवार्य है। यह महिलाओं को सुरक्षित कार्य वातावरण देने का प्रयास है।

- महिला उद्यमिता योजनाएं:

सरकार ने महिला उद्यमिता को बढ़ावा देने के लिए कई योजनाएं चलाई हैं, जैसे:

  - स्टैंड अप इंडिया योजना
  - मुद्रा योजना (MUDRA)
  - महिला कोष योजना इन योजनाओं के अंतर्गत महिलाओं को कम ब्याज पर ऋण, प्रशिक्षण और बाज़ार सहायता दी जाती है।

- बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ

हालांकि यह योजना प्राथमिक स्तर की शिक्षा पर केंद्रित है, लेकिन इसका व्यापक प्रभाव महिलाओं की दीर्घकालिक साक्षरता, जागरूकता और आत्मनिर्भरता पर भी देखा गया है।

- ई-श्रम पोर्टल:

असंगठित क्षेत्र की महिला श्रमिकों के पंजीकरण के लिए यह डिजिटल पोर्टल शुरू किया गया है, जिससे उन्हें सामाजिक सुरक्षा योजनाओं का लाभ मिल सके।

इन सभी नीतियों और योजनाओं का प्रभाव तभी पूर्ण रूप से महसूस होगा जब उनका क्रियान्वयन जमीनी स्तर पर ठीक से हो। साथ ही, महिलाओं को इनके प्रति जागरूक और आत्मनिर्भर बनाना भी ज़रूरी है।

6. सकारात्मक परिवर्तन एवं संभावनाएँ

हाल के वर्षों में शहरी भारत में कार्यरत महिलाओं की स्थिति में कई सकारात्मक परिवर्तन देखने को मिले हैं। शिक्षा, तकनीक और सामाजिक जागरूकता के चलते महिलाएं अब केवल परंपरागत भूमिकाओं तक सीमित नहीं हैं, बल्कि नेतृत्व, नवाचार और नीति-निर्धारण में भी सक्रिय भूमिका निभा रही हैं।

सबसे बड़ा परिवर्तन यह है कि अब लड़कियाँ प्राथमिक से लेकर उच्च शिक्षा तक अधिक संख्या में पढ़ाई कर रही हैं। इससे उनके करियर विकल्प बढ़े हैं। विशेष रूप से STEM (विज्ञान, तकनीक, इंजीनियरिंग, गणित) और प्रबंधन जैसे क्षेत्रों में अब अधिक महिलाएं दिख रही हैं। इसके अलावा डिजिटल साक्षरता के कारण महिलाएं ऑनलाइन कार्य, फ्रीलांसिंग और घर से व्यवसाय (home-based business) की ओर भी आकर्षित हो रही हैं।

कार्यस्थलों पर भी सकारात्मक बदलाव हुए हैं। कई कंपनियाँ अब "वर्क फ्रॉम होम", फ्लेक्सी टाइमिंग, मेटरनिटी/पैरेंटल लीव जैसी सुविधाएं दे रही हैं, जिससे महिलाओं को कार्य और पारिवारिक दायित्वों में संतुलन बनाने में मदद मिलती है।

महिला नेतृत्व को भी अब अधिक मान्यता मिल रही है। शिक्षा, राजनीति, कॉर्पोरेट, और सामाजिक संगठनों में महिलाएं प्रभावी नेतृत्व में आ रही हैं। इससे समाज में महिला क्षमता के प्रति विश्वास भी बढ़ा है।

इसके अतिरिक्त, स्वरोज़गार और स्टार्टअप संस्कृति में महिलाओं की भागीदारी तेजी से बढ़ रही है। अनेक महिलाएं छोटे और मझोले व्यापार (SMEs), सोशल इंटरप्राइजेज, हैंडलूम/हैंडीक्राफ्ट्स और ऑनलाइन सेवाओं के माध्यम से अपनी पहचान बना रही हैं।

हालांकि चुनौतियाँ अब भी मौजूद हैं, लेकिन संभावनाएं भी व्यापक हैं। यदि समाज, सरकार और निजी क्षेत्र मिलकर महिलाओं को प्रोत्साहन दें, तो यह प्रगति और अधिक तीव्र हो सकती है। महिलाओं का आत्मबल और क्षमताएँ भारत को सामाजिक व आर्थिक रूप से अधिक समावेशी राष्ट्र बनने में सहायता करेंगी।

7. निष्कर्ष (Conclusion)

शहरी क्षेत्रों में कार्यरत महिलाओं की सामाजिक और आर्थिक चुनौतियाँ आज भी गंभीर हैं, लेकिन इन चुनौतियों के बीच से ही आशा की किरणें भी निकलती हैं। महिलाएं अब न केवल नौकरी कर रही हैं, बल्कि वे अपने आत्मविश्वास, शिक्षा और कार्यकुशलता के बल पर समाज की सोच को भी बदल रही हैं। यह परिवर्तन धीरे-धीरे लेकिन दृढ़ता से आगे बढ़ रहा है।

जहाँ एक ओर महिलाओं को पारिवारिक जिम्मेदारियों, सामाजिक पूर्वाग्रहों और कार्यस्थल पर असमानताओं से जूझना पड़ता है, वहीं दूसरी ओर उनके हौसले, जज़्बे और लगातार सीखने की भावना उन्हें आगे बढ़ने से रोक नहीं पा रही है। चाहे वह घरेलू कार्य से जुड़े क्षेत्र हों या कॉर्पोरेट नेतृत्व, महिलाएं हर जगह अपनी उपस्थिति दर्ज करवा रही हैं।

सरकारी योजनाओं, कानूनी सुरक्षा और सामाजिक संगठनों की मदद से महिलाओं को एक बेहतर मंच मिल रहा है। हालांकि इन नीतियों का प्रभाव तभी होगा जब वे प्रभावी तरीके से लागू हों और महिलाएं स्वयं भी उनके प्रति जागरूक हों। परिवार और कार्यस्थल का समर्थन, सामाजिक सोच में लचीलापन और पुरुषों की साझेदारी, महिला सशक्तिकरण को सशक्त नींव देंगे।

इसलिए यह कहना उचित है कि महिलाओं की भागीदारी किसी "रियायत" का विषय नहीं है, बल्कि यह समावेशी विकास और आर्थिक समृद्धि की अनिवार्यता है। जब महिलाएं समाज और राष्ट्र के निर्माण में बराबर की भागीदार बनेंगी, तभी भारत एक सशक्त और समतामूलक राष्ट्र के रूप में उभरेगा।

8. सुझाव

शहरी क्षेत्रों में कार्यरत महिलाओं की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने के लिए कुछ ठोस सुझाव आवश्यक हैं। सबसे पहले, कार्यस्थलों पर लैंगिक समानता को सुनिश्चित करना चाहिए—चाहे वह वेतन, पदोन्नति या कार्य के अवसर हों। फ्लेक्सी वर्किंग टाइम और वर्क फ्रॉम होम जैसे विकल्पों को व्यापक रूप से अपनाया जाना चाहिए, ताकि महिलाएं पारिवारिक दायित्वों के साथ कार्य कर सकें।

सुरक्षा व्यवस्था को सशक्त करना, खासकर यौन उत्पीड़न की शिकायतों पर त्वरित कार्रवाई, आवश्यक है। इसके साथ ही, महिलाओं के लिए वित्तीय साक्षरता कार्यक्रम और स्टार्टअप गाइडेंस जैसे प्रयास किए जाएं ताकि वे आत्मनिर्भर बन सकें।

पुरुषों की भागीदारी को भी बढ़ाना होगा—घरेलू कार्यों में सहयोग और महिलाओं के करियर के प्रति समर्थन के रूप में। समाज को चाहिए कि वह पारंपरिक सोच को बदले और महिलाओं की क्षमता को समान रूप से मान्यता दे।

संदर्भ सूची (References)

यह लेख विभिन्न पुस्तकों, सरकारी रिपोर्टों और शोध-आलेखों पर आधारित है। नीचे कुछ प्रमुख स्रोत दिए गए हैं:

- शर्मा, राम एवं मेहरा, एम. के. — "महिला विकास", वर्धमान पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 2010, पृष्ठ 21
- गुप्ता, कैलाश कुमार — "भारतीय महिलाएं: शोषण, उत्पीड़न और अधिकार", न्यू कैसल पब्लिशर्स, जयपुर, 2005, पृष्ठ 35
- गोयल, डॉ. वी.पी. — "भारतीय नारी विकास की ओर", राजस्थान ग्रंथालय, कोटा, 2009, पृष्ठ 98
- यथासिद्ध — "संविधान और महिला अधिकार", पृष्ठ 103
- अक्सोदी, डॉ. रौशनी — "हिंदी साहित्य में कार्यरत महिलाएं", पृष्ठ 56
- Periodic Labour Force Survey (PLFS), भारत सरकार
- श्रम मंत्रालय, भारत सरकार — ई-श्रम पोर्टल
- POSH अधिनियम 2013, भारत सरकार
- मातृत्व लाभ अधिनियम 2017
- मुद्रा योजना और स्टैंड अप इंडिया योजना के वेबसाइट्स